प्राक्कथन

प्राक्कथन

आज पत्रकारिता का क्षेत्र बहुआयामी है और मानव जीवन की समस्त गतिविधियाँ इसकी सीमा में आती हैं। पत्रकारिता इधर-उधर से एकत्र सूचना का केन्द्र मात्र नहीं हैं, परन्तु वास्तव में एक रचनात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलन है; पत्रकारिता, सामाजिक परिवर्तन तथा समाज पुनःनिर्माण की धुरी है। आजकल दिन-ब-दिन पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक बनता जा रहा है और साथ-साथ प्रभावी भी।

आज पत्रकारिता अपने नए रूप के साथ विकसित हो रही है - उसका कारण आज के वैज्ञानिक युग में जनसंचार माध्यम के क्षेत्र में घटित हुई नवीन क्रान्ति ही है। पत्रकारिता शब्द के अन्तर्गत वे सभी प्रकार की विधाएँ समाहित हैं, जिनमें और जिनके द्वारा समाचार और समाचारों पर टिप्पणियाँ जनता तक पहुँचती हैं। वर्तमान स्थितियों में पत्रकारिता जीवन का अंग है।

सभी भाव, कार्य एवं विचार जो घटनाओं को जागृत करते है। तकनीकी साधनों के नित-नवीन अविष्कारों के कारण पत्रकारिता का क्षेत्र भी नित नूतन एवं आकर्षक बनता जा रहा है। आज संख्यात्मक तथा गुणात्मक स्तर पर पत्रकारिता निर्विवाद रूप से प्रगति कर रही है। आज इसकी आवश्यकता और उपयोगिता इतनी अधिक बढ़ गयी है कि वह आज शिक्षा-क्षेत्र के अन्याय विषयों की भाँति एक स्वतन्त्र विधा बन चुकी है और बहुत से विश्वविद्यालयों में अलग पाठ्यक्रम के रूप में स्थान पा चुकी है।

आज के युग को यदि विज्ञापन का युग कहा जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी। ऐसा लगता है जीवन में सर्वव्यापी अवधारणा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। व्यक्ति का जन्म से लेकर मृत्यु तक विज्ञापन से निरन्तर सरोकार रहता है। विज्ञापन के सार्वभौतिक प्रभाव के परिणामस्वरूप हम यह तो जानते है कि विज्ञापन उत्पादकों द्वारा तैयार उत्पादकों की जानकारी उपभोक्ताओं तक पहुँचाकर उन्हें सही वस्तु खरीदने में मदद करता है।

मेरे इस प्रबंध में कुल पाँच अध्याय हैं। इस शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य पत्रकारिता और विज्ञापन का जो स्थान, महत्त्व है, उसकी विविध समस्याएँ उसके बारे में लोगों को उद्‌बोधित कराना है। इस शोध प्रबंध के द्वारा इस बात की पुष्टि होती है।

मैंने **प्रथम अध्याय** में पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप की चर्चा की है। इसमें पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, महत्त्व एवं उद्देश्य, कर्त्तव्य और दायित्व, पत्रकारिता और सामाजिक परिवर्तन, समाज में पत्रकारिता का स्थान, पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति आदि के बारे में स्पष्टीकरण दिया है।

दूसरे अध्याय में विज्ञापन का अर्थ एवं परिभाषा, विज्ञापन की अवधारणा में विज्ञापन का इतिहास, स्वरूप, उद्देश्य एवं आवश्यकता, पत्रकारिता में विज्ञापन की भूमिका एवं स्थान निर्धारण, पत्रकारिता में प्रभावी विज्ञापन के तत्त्व एवं विशेषताएँ, विज्ञापन के विभिन्न प्रकार एवं कार्य आदि का स्पष्ट रूप से विविरण दिया गया है।

तीसरे अध्याय में विज्ञापन पत्रकारिता का जीवन रक्त, पत्रकारिता और विज्ञापन का पारस्परिक संबंध, पत्रकारिता में विज्ञापन का कर्त्तव्य, विज्ञापन जनता